आयशा और ईमानदारी का पर्स

Momta Begum

आयशा एक छोटे और हरे-भरे गाँव में रहती थी, जहाँ चारों ओर सुंदर पेड़-पौधे और नीला आसमान था। वह गाँव के सभी लोगों से प्य करती थी और बहुत समझदार तथा सच बोलने वाली लड़की थी। ह सुबह वह मुस्कुराते हुए गाँव की पगडंडियों से होकर स्कूल जाया कर थी।

एक दिन जब आयशा शाम को स्कूल से घर लौट रही थी, तो उसकी नज़र पगडंडी के किनारे पड़े एक सुंदर पर्स पर पड़ी। वह पर्स ल रंग का था और उस पर सुंदर नक्काशी की गई थी। आयशा ने रुकक पर्स उठाया और उसे ध्यान से देखा।

आयशा ने पर्स को धीरे से खोला तो देखा कि उसके अंदर कुछ पै
रखे हुए थे। पैसों के साथ ही उसमें एक छोटा सा पहचान-पत्र भी रखा था।
पर्स को देखकर आयशा सोचने लगी कि इसका मालिक इसे खोकर
कितना परेशान हो रहा होगा।

एक पल के लिए आयशा के मन में विचार आया कि वह उन पैस
से अपनी मनपसंद चीजें खरीद सकती है। लेकिन उसने तुरंत उस विच
को हटा दिया, क्योंकि उसने हमेशा सीखा था कि ईमानदारी से बढ़कर
कुछ नहीं होता।

आयशा ने पहचान-पत्र निकाला और उस पर लिखे पते को ध्यान से पढ़ा। वह पता उसी गाँव के दूसरे छोर पर रहने वाले एक बुजुर्ग का था। आयशा ने बिना देर किए पर्स उसके सही मालिक तक पहुँचाने का फैसला किया।

आयशा गाँव की पगडंडियों पर चलते हुए पहचान-पत्र पर लिखे प
की ओर बढ़ चली। ढलता हुआ सूरज आसमान में नारंगी और सुनहर्र
रोशनी बिखेर रहा था, जिससे पूरा गाँव बेहद खूबसूरत लग रहा था।

आयशा उस पते पर पहुँची और उसने मकान का दरवाज़ा खटखटाया। अंदर से एक बुज़ुर्ग सज्जन बाहर आए, जो अपना पर्स खं जाने के कारण बहुत उदास और चिंतित दिख रहे थे।

आयशा ने बहुत ही आदर से पर्स बुजुर्ग के हाथों में सौंप दिया। बुजुर्ग ने जब अपना पर्स देखा, तो उनके चेहरे पर राहत और असीम खु की मुस्कान दौड़ गई। उन्होंने आयशा को आशीर्वाद देते हुए कहा कि तुमने साबित कर दिया कि ईमानदारी ही सबसे बड़ी दौलत है।

आयशा ने बड़ी ही मासूमियत और दृढ़ता से मुस्कुराते हुए जवाब दिया कि जो चीज़ हमारी नहीं होती, उसे अपने पास रखना सही नहीं है। बुज़ुर्ग आयशा की बातें और उसकी सच्चाई देखकर बहुत प्रभावित हुए।

यह बात जल्द ही पूरे गाँव में फैल गई और सभी लोगों ने आयश की सच्चाई की सराहना की। उस दिन के बाद से गाँव के सभी बच्चे आयशा को अपना आदर्श मानने लगे और हमेशा ईमानदारी के रास्ते प चलने की प्रेरणा लेने लगे।